

उद्योग-वैज्ञानिक-किसान इंटरफेस मीटिंग

उद्योग-वैज्ञानिक-किसान इंटरफेस मीटिंग 5 मार्च, 2024 को आईसीएआर- केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम में हुई। इस मीटिंग में उद्योग, प्रगतिशील किसान, नीति निर्माता और देशभर से विशेषज्ञ पैनल सहित अधिकतम 100 पेशेवरों की भागीदारी थी। आईसीएआर-सीआईआरजी के निदेशक डॉ। मनीष कुमार चेटली ने भारत में बकरियों के उत्पादन स्थिति पर अवलोकन प्रस्तुत किया, विशेष रूप से बकरी दूध और मांस की बढ़ती मांग के प्रति। साथ ही, उन्होंने बाजार और व्यापार के संबंध में बकरी पालन की शक्तियों और अवसरों को भी जोर दिया, भारत में बकरी पालन के भविष्य के विषय में विशेष ध्यान दिया। डॉ। चेटली ने जोर दिया कि किसान-मित्रक भविष्यवाणी तकनीक की बकरी पालनकर्ताओं के बीच प्रसार करना उत्पादकता और आर्थिक स्थिरता में वृद्धि के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा, जिससे बकरी पालकों के बीच व्यापक स्वीकृति हो। यह आयोजन डॉ। के. गुरुराज, प्रबंधक संस्थान प्रौद्योगिकी प्रबंधन इकाई, सहित डॉ। अशोक कुमार, डॉ। तरुण पाल सिंह और डॉ। रवि रंजन द्वारा आयोजित किया गया था।

आईसीएआर के सहायक निदेशक डॉ। जी.के. गौर, नई दिल्ली, मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद थे, जबकि यूपीएलबीडी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ। नीरज गुप्ता को सम्मान अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था। डॉ। गौर ने उत्कृष्ट जीनजूल प्रजातियों के आयात की महत्वता पर जोर दिया ताकि बकरियों में अपेक्षित उत्पादकता स्तर तक पहुंचा जा सके। उन्होंने किसानों द्वारा उठाए गए क्षेत्रीय स्तर के मुद्दों को अनुसंधान और विकास के लिए प्राथमिकता देने की आवश्यकता को दोहराया। डॉ। नीरज गुप्ता ने विभिन्न सरकारी योजनाओं को हाइलाइट किया जो पशु पालन विकास के लिए शुरू की गई हैं, जो जनता के बीच बकरी पालन की अधिकतम स्वीकृति को लाई है।

इवेंट के दौरान, आगरा के आरबीएस इंजीनियरिंग और तकनीकी कैंपस तथा मथुरा के आईसीएआर-सीआईआरजी के बीच जैव प्रौद्योगिकी और जीव विज्ञान से संबंधित शोध क्षेत्रों में सहयोग के लिए एक समझौता (MoU) हस्ताक्षरित किया गया। साथ ही, आगरा, उत्तर प्रदेश के वीडिएमआर एग्रोटेक प्राइवेट लिमिटेड और आईसीएआर-सीआईआरजी के बीच बकरी उत्पादों के लिए एक व्यापार की शर्तों की समझौता किया गया। डॉ। मनीष के चेटली, निदेशक, उद्यमियों के बीच बकरी आधारित तकनीकों के व्यापक अपनाव की महत्वता पर जोर दिया, खासकर राष्ट्र के शिक्षित युवाओं के बीच बकरी पालन को लोकप्रिय बनाने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में।

एक पैनल चर्चा जिसमें उद्योग साथी, किसान उद्यमी, आईसीएआर-सीआईआरजी मखदूम के वैज्ञानिक और देशभर से पैनलकार, जिसमें डीयूवीएसयू, मथुरा के विशेषज्ञ भी शामिल हैं, ने भारत में बकरी उत्पादन को घेरने वाली चुनौतियों पर ध्यान केंद्रित किया। चर्चा ने संभावित तकनीकी समाधानों और आगे की दिशा की भी बातचीत की। उच्च गुणवत्ता वाली जीनप्लाज्म की उपलब्धता, ब्रीड डेवलपमेंट के लिए चारा और चारा गुणवत्ता, बकरी पालन के लिए चराई क्षेत्र, कृत्रिम गर्भाधान के रोकथाम में बाधाएँ, और बकरी उत्पादन की अर्थशास्त्र, जैसे विभिन्न मुद्दों का परीक्षण किया गया। इंटरफेस फलदायी साबित हुआ, क्योंकि यह बकरी उत्पादकों और अन्य हितधारकों द्वारा किए गए मुख्य मुद्दों की पहचान की, जो भविष्य के शोध के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्रों के रूप में काम करेंगे।

